मूल जगत का - बेटियाँ

(कुण्डलिया छंदों पर आधारित काव्य)

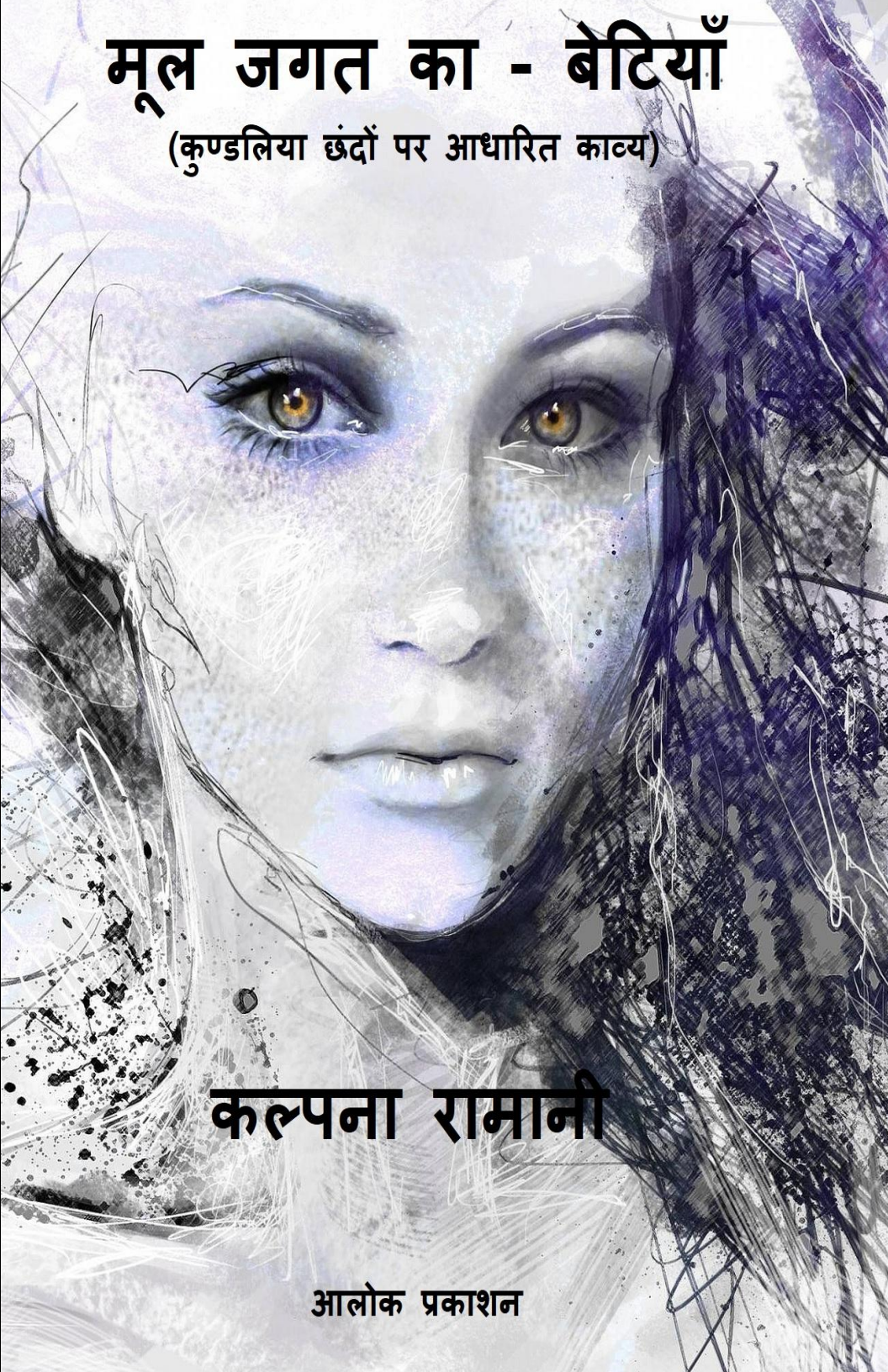

कल्पना रामानी

आलोक प्रकाशन

मूल जगत का - बेटियाँ

कुण्डलिया छंदों पर आधारित काव्य

C - कल्पना रामानी 2018

आलोक प्रकाशन

कल्पना रामानी - संक्षिप्त परिचय

६ जून १९५१ को उज्जैन में जन्म. हाई स्कूल तक औपचारिक शिक्षा. कंप्यूटर से जुड़ने के बाद रचनात्मक सक्रियता. कहानियाँ, लघुकथाओं के अलावा गीत, गजल आदि छंद विधाओं में रुचि. लेखन की शुरुवात -सितम्बर २०११ से. रचनाएँ अनेक स्तरीय मुद्रित पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही अंतर्जाल पर लगातार प्रकाशित होती रहती हैं. नवगीत संग्रह - "हौसलों के पंख" (२०१३-अंजुमन प्रकाशन), गीत - नवगीत- संग्रह - "खेतों ने ख़त लिखा" (२०१६-अयन प्रकाशन) एवं ग़ज़ल संग्रह - मैं 'ग़ज़ल कहती रहूँगी' (२०१६ अयन प्रकाशन) से प्रकाशित.

प्रथम नवगीत संग्रह पर नवांकुर पुरस्कार, कहानी प्रधान पत्रिका कथाबिम्ब में प्रकाशित कहानी 'कसाईखाना' पर कमलेश्वर स्मृति पुरस्कार, कहानी 'अपने-अपने हिस्से की धूप' को प्रतिलिपि कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार एवं लघुकथा 'दासता के दाग' को लघुकथा प्रतियोगिता में व्दितीय पुरस्कार प्राप्त.

वर्तमान में वेब पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका - अभिव्यक्ति-अनुभूति (संपादक/पूर्णिमा वर्मन) के सह-संपादक पद पर कार्यरत.

अपनी बात

प्रिय पाठकों

नमस्कार

मेरे कहानी-संग्रह को आप सबका अप्रत्याशित स्नेह मिला इसके लिए आप सबकी और संपादक आदरणीय आलोक शुक्ल जी की मन से आभारी हूँ. अब मेरा कुण्डलिया छंदों पर आधारित काव्य ई बुक के रूप में आपके सामने है. दरअसल मैंने लेखन की शुरुवात ही छंद-काव्य से की थी. वेब की दुनिया में कोने-कोने में फैली अपनी इन रचनाओं को ई-बुक के रूप में प्रकाशित करवाने का एक ही उद्देश्य है कि सुधि पाठक मेरे काव्य का आनंद उठा सकें. मेरी छंद रचनाओं की विशेषता यह है कि मैंने इन्हें विषयानुसार छंदों में ढाला है. इन छंदों में आपको लगभग हर विषय पर रचनाएँ मिल जाएंगी. आशा है आपका भरपूर स्नेह मुझे मिलता रहेगा.

कल्पना रामानी

मूल जगत का - बेटियाँ(२ छंद)

मूल जगत का- बेटियाँ, जगती पर उपकार।
सिर्फ भयावह कल्पना, बेटी बिन संसार।
बेटी बिन संसार, बात सच्ची यह मानें
अगर किया ना गौर, अंत दुनिया का जानें।
कहनी इतनी बात, करें स्वागत आगत का
जीवन का आधार, बेटियाँ- मूल जगत का

माँ मेरी, तुमसे करे, बेटी एक सवाल।
मुझे मारने गर्भ में, फैलाया क्यों जाल?
फैलाया क्यों जाल, कि मैं हूँ अंश तुम्हारा
अपना ही अपमान, किसलिए तुमको प्यारा।
क्यों पिछड़ी है सोच, नए इस युग में भी हाँ
अंजन्मी का दोष, बता क्या है मेरी माँ?

नारी अब तो उड़ चली (५ छंद)

नारी अब तो उड़ चली, आसमान की ओर।
चाँद सितारे छू रही, थाम विश्व की डोर।
थाम विश्व की डोर, जगत ने शीश नवाया
दृढ़ निश्चय के साथ, हार को जीत दिखाया।
पाया यश सम्मान, दंग है दुनिया सारी।
नये वक्त के साथ, चल पड़ी है अब नारी।

घरनी से ही घर सजे, जुड़ें दिलों के तार
श्रम उसका अनमोल है, घर की वो आधार।
घर की वो आधार, महकता रहता आँगन
बरसा करता प्यार, लगे पतझड़ भी सावन।
सीधी सच्ची बात, 'कल्पना' इतनी कहनी
स्वर्ग बने संसार, अगर घर में हो घरनी।

मैं नारी अबला नहीं, बल्कि लचकती डाल।
मेरा इस नर-जूथ से, केवल एक सवाल।

केवल एक सवाल, उसे क्यों समझा कमतर
जिसके उर में व्योम और कदमों में सागर।
परिजन-प्रेम, ममत्व, मोह की हूँ मारी मैं
मेरा बल परिवार, नहीं अबला, नारी मैं।

नर-नारी दो चक्र हैं, जीवन रथ की शान।
बना रहेगा संतुलन, गति हो अगर समान।
गति हो अगर समान, नहीं पथ होगा बाधित।
गृह-गुलशन-गुलदान, रहेगा सदा सुवासित।
हर मुश्किल आसान, करेगी सोच हमारी।
बढ़ें हाथ से हाथ, मिलाकर यदि नर-नारी।

घर बाहर के बोझ से, नारी है बेचैन।
हक़ तो उसने पा लिए, मगर खो दिया चैन।
मगर खो दिया चैन, बढ़ाया बोझा अपना।
किसे सुनाए दर्द, स्वयं ही बोया सपना।
करें स्वजन सहयोग, अगर अब आगे रहकर
बँट जाएगा बोझ, रहे बाहर या फिर घर।

हम बच्चे वे फूल हैं (४ छंद)

बचपन में पाएँ अगर, ज्ञान संग व्यायाम।
सुंदर होगी भोर हर, सुख देगी हर शाम।
सुख देगी हर शाम, उल्लसित होगा तन-मन।
काँटों को दे मात, खिलेगा कुसुमित यौवन।
अनुशासन की नींव, गढ़ेगी काया कंचन।
ज्ञान और व्यायाम, संग बीते यदि बचपन।

हम बच्चे वे फूल हैं, जिनसे महके बाग।
इस कलुषित संसार में, अब तक हैं बेदाग।
अब तक हैं बेदाग, गंध का ध्वज फहराएँ
यत्र-तत्र सर्वत्र, ऐक्य का अलख जगाएँ।
प्राणिमात्र को जो कि, बाँटते रहते हैं गम
उन शूलों के साथ, बाग में रहते हैं हम।

बच्चे क्या जानें भला, कपट, द्वेष या बैर।
सबको अपना मानते, दिखे न कोई गैर।

दिखे न कोई गैर, सभी से हिल मिल जाते
करके मीठी बात, हमेशा मन बहलाते।
जैसा दें आकार, ढलें ये लोए कच्चे
कपट द्वेष या बैर, न जानें भोले बच्चे।

जिस घर में गूँजे सदा, किलकारी का शोर।
प्यारी मीठी बोलियाँ, हलचल चारों ओर।
हलचल चारों ओर, खिलौने फैले फैले
दीवारों पर दाग, फर्श हों मैले मैले।
कहनी इतनी बात, सभी यह कहते अक्सर
बन जाता सुख धाम, चपल बच्चे हों जिस घर।

फिर से आओ राम जी (५ छंद)

फिर से आओ राम जी, तुम्हें पुकारे देश।
मर्यादा के मनुष में, चिह्न नहीं अब शेष।
चिह्न नहीं अब शेष, संस्कृति भूले अपनी
रही साथ मद, लोभ, स्वार्थ की माला जपनी।
काटो तम-अज्ञान, ज्ञान का दीप जलाओ
तुम्हें पुकारे देश, राम जी! फिर से आओ।

कलियुग में श्री राम से, पुत्र कहाँ हैं आज।
पित्राज्ञा से वन गमन, किया छोड़कर ताज।
किया छोड़कर ताज, राजसी साधन त्यागे
लखन सिया कर जोड़, चल दिये आगे-आगे।
वैसे भार्या, भ्रात, कहाँ हैं अब इस युग में
रिश्ते-नाते, प्रेम, खो गए सब कलियुग में।

भारत भू पर राम थे, त्रेता युग अवतार।
करने आए भूमि पर, दुष्टों का संहार।
दुष्टों का संहार, स्वयं को जन से जोड़ा।

सिय का थामा हाथ, धनुष शिवजी का तोड़ा।
नवमी तिथि पर पर्व, चैत्र में मनता घर-घर
जन्मे थे श्री राम, इसी दिन भारत भू पर।

तुलसी की चौपाइयाँ, घर-घर के हों गीत।
पुरुषोत्तम श्री राम की, जोड़ें मन से प्रीत।
जोड़ें मन से प्रीत, राम धुन हर दिन गूँजे
रामायण को भाव, भक्ति से जन-जन पूजे।
होगा सुख कल्याण, दृष्टि से समदरसी की
भाव, भावना, भक्ति, अनुसरित हो तुलसी की।

भव के द्वारे बंद कर, अंतर के पट खोल।
समाधिस्थ हो राम की, एक बार जय बोल।
एक बार जय बोल, स्वर्ग के द्वार खुलेंगे
मृत्युलोक से दूर, दैव्य से आप जुड़ेंगे।
कहनी इतनी बात, राम जी सबको तारे।
अंतर के पट खोल, बंद कर भव के द्वारे।

फागुन के दिन चार (१० छंद)

चलो सहेली बाग में, फागुन के दिन चार
ऋतु बसंत की आ गई, करके नव शृंगार।
करके नव शृंगार, केसरी आँचल ओढ़ा
लाए पुष्प गुलाल, ढाक भी रंग कटोरा।
खेलें होली आज, नहीं जो अब तक खेली
फागुन के दिन चार, बाग में चलो सहेली

होली आई झूमकर, चढ़ा रंग का रोग।
हर होटल हर माल पर, छाए छप्पन भोग।
छाए छप्पन भोग, घरों में कौन पकाए
निकल पड़े हैं साथ, सभी सड़कों पर छाए।
पकवानों के संग, भंग की खाकर गोली
घूम रहे बेहाल, झूमकर आई होली।

होली ऐसी खेलिए, हो आनंद अभंग।
सद्भावों के रंग में, घुले प्रेम की भंग।
घुले प्रेम की भंग, भेद का भूत भगाएँ।

ऐसे मलें गुलाल, शत्रु भी मित्र कहाएँ।
रखकर होश हवास, कीजिये हँसी ठिठोली।
हो आनंद अभंग, खेलिए ऐसी होली।

कथा पुरातन काल की, हमें दिलाती याद।
जली होलिका, बच गए, ईश भक्त प्रहलाद।
ईश भक्त प्रहलाद, भक्ति से ताकत हारी
यही पर्व का सार, जानती दुनिया सारी।
भर लें हम भी स्वस्थ, रंग जीवन में नूतन।
भूलें कभी न मित्र, 'कल्पना' कथा पुरातन।

होली सिर पर चढ़ गई, खूब सखी इस बार
झूम रही पिचकारियाँ, घूम रही दीवार।
घूम रही दीवार, कदम हैं लगे थिरकने
गगन, सितारे, चाँद, लगे हैं दिन दिखने
कभी न खेले रंग, 'कल्पना' मैं थी भोली
मगर सखी इस बार, चढ़ गई सिर पर होली।

सुनी सुनाई बात है, होली इक लठमार।
नर पर भाँजे लाठियाँ, वृंदावन की नार।
वृंदावन की नार, यशोदा माँ बतलाते
नर कहलाते कृष्ण, सज़ा चोरी की पाते।
तब से ऐसी रीत, 'कल्पना' चलती आई
होली इक लठमार, बात है सुनी सुनाई।

रचीं ऋचाएँ प्रेम की, रंगों ने हर पात।
सजी खड़ी है बाग में, फूलों की बारात।
फूलों की बारात, शगुन लाई पिचकारी
स्नेह मिलन को आज, उमड़ आए नर-नारी।
कहनी इतनी बात, इस तरह पर्व मनाएँ
ज्यों रंगों ने मीत, प्रीत की रचीं ऋचाएँ।

किया किनारा माघ ने, फागुन आया द्वार।
लाया पुरवा प्रेम की, होली का त्यौहार।
होली का त्यौहार, कि मौसम यों कुछ महका
हर बगिया का फूल, रंग में घुलकर बहका।
गूँजे रसमय गीत, अहा! क्या खूब नज़ारा

फागुन आया द्वार, माघ ने किया किनारा।

सतरंगी सपने लिए, आँगन उतरे रंग।
दिन फागुन के आ गए, झूम उठा हर अंग।
झूम उठा हर अंग, चली फिर हवा बसंती
सुर सरगम के साथ, सजी होली रसवंती।
घुँघरू बाँधे पाँव, ताल पर लगे थिरकने
आँगन उतरे रंग, लिए सतरंगी सपने।

पूनम की यह रात है, मौसम के सब रंग।
दहन हो रही होलिका, ढ़ोल ढमाके संग।
ढोल ढमाके संग, घुली मस्ती जन-जन में
पूजा और प्रसाद, भरे पावनता मन में।
उत्सव की है धूम, न कोई छाया गम की
सब रंगों के साथ, रात आई पूनम की।

शीत ऋतु (९ छंद)

जब से डाला शीत ने, आकर पुनः पड़ाव।
गाँव गाँव दिखने लगे, जलते हुए अलाव।
जलते हुए अलाव, स्वाद मेवों का भाया
गाजर हलवा दूध, सूप ने रंग जमाया।
मावे के मिष्ठान्न, लग रहे अच्छे सबसे
आकर पुनः पड़ाव, शीत ने डाला जबसे।

धीरे-धीरे शीत की, लहर चली चहुं ओर।
ज़ीरो डिग्री में जमे, दिवस रात औ भोर।
दिवस रात औ भोर, सूर्य भी सिकुड़ा सिमटा
आता है कुछ देर, गरम वस्त्रों में लिपटा।
सर्द हवा विकराल, गात अंतर तक चीरे
लहर चली चहुं ओर, शीत की धीरे-धीरे।

सूरज ने जाने कहाँ, किरणें दी हैं भेज।
सर्द हवाएँ ओढ़कर, स्वयं हुआ निस्तेज।
स्वयं हुआ निस्तेज, धर्म अपना ही भूला

कुछ दिन की है बात, प्यार से सहज कबूला।
उगते ही नित प्रात, दाँत लगते हैं बजने
किरणें दी हैं भेज, कहाँ जाने सूरज ने।

लोग घरों में कैद हैं, पंछी दुबके नीड़।
चौराहे पर अब नहीं दिखती वैसी भीड़।
दिखती वैसी भीड़, बर्फ ने की बमबारी।
कर्फ़्यू का ऐलान, किया कुहरे ने जारी।
दिखते गाँव अलाव, और हीटर शहरों में।
पंछी दुबके नीड़, कैद हैं लोग घरों में।

जितना भागें शीत से, उतने होंगे तंग।
अच्छा है हम दोस्ती, कर लें उसके संग।
कर लें उसके संग, इस तरह हो तैयारी
ताप सखा हो साथ, सखी हो धूप हमारी।
सुख देगा ऋतु चक्र, "कल्पना" कहती इतना
होंगे उतने तंग, शीत से भागें जितना।

वहाँ न जाना शीत तुम, दीन बसे जिस ओर।
चिथड़ों में हों काटते, हर दिन, रैना, भोर।
हर दिन रैना भोर, न कोई छप्पर सिर पर
फिरते नंगे पाँव, पेट ही भरना दूभर।
कहनी इतनी बात, कभी मत उन्हें सताना
दीन बसे जिस ओर, शीत तुम वहाँ न जाना।

धूप चदरिया बिछ गई, चलो भगाएँ शीत।
दर्शन देने आ गया, दिनकर बनकर मीत।
दिनकर बनकर मीत, चटाई आँगन डालें
बेर और अमरूद, बाँटकर, मिलकर खा लें।
पिंटू, चिंटू, राम, घरों से निकलो भैया
चलो भगाएँ शीत, बिछ रही धूप चदरिया।

सूरज देवा आजकल, हो जाते हैं लेट।
भर सर्दी में धूप के, बढ़ा लिए हैं रेट।
बढ़ा लिए हैं रेट, छिपाकर किरणें सारी
हो जाते हैं ओट, न मानें बात हमारी।
करें प्रार्थना ध्यान, और किरणों की सेवा

तब फिर शायद लेट, न आएँ सूरज देवा।

शीतल रानी अब हमें, कर दो तुम आज़ाद।
दुखिया तुमसे कर रहा, हाथ जोड़ फरियाद।
हाथ जोड़ फरियाद, देश है यह दीनों का।
कुछ कर लो महसूस, दर्द उघड़े सीनों का।
जग सारा बेपीर, नहीं है नई कहानी
करो हमें आज़ाद, शीत से, शीतल रानी।

कोहरा (४ छंद)

दस्तक से पलकें खुलीं, देखी सुंदर भोर।
शीत खड़ी थी सामने, कुहरा था पुरजोर।
कुहरा था पुरजोर, धुआँ ही धुआँ बिछा था।
भूगत होकर सूर्य, न जाने कहाँ छिपा था।
रहे काँपते गात, न आया दिनकर जब तक
पर मन भाई भोर, और कुहरे की दस्तक।

दर पर आई शीत है, धर कुहरे का ताज।
ऋतु-रानी का आज से, होगा एकल राज।
होगा एकल राज, व्यर्थ है छिपकर रहना
पट खोलो हे मीत, देख कुदरत का गहना।
कहनी इतनी बात, निहारो, दृश्य नज़र-भर
धर कुहरे का ताज, शीत है आई दर पर।

नदिया कुहरे की दिखी, हुए बहुत हैरान।
कल तक थी रौनक जहाँ, वहाँ दिखा सुनसान।
वहाँ दिखा सुनसान, धुंध के देखे बादल

सूरज अंतर्ध्यान, शीत का फैला आँचल।
सिहर रहे थे जीव, फूल-फल, आँगन-बगिया
हुए बहुत हैरान, देख कुहरे की नदिया।

कुछ दिन भाया कोहरा, बढ़ी अचानक शीत।
ठंडक सिर पर चढ़ गई, भूले कविता गीत।
भूले कविता गीत, गुम हुआ दिन में दिनकर।
तन को लिया लपेट, गरम वस्त्रों में जी भर।
काँपे थर थर गात, डसे दिन सूरज के बिन।
बढ़ी अचानक शीत, कोहरा भाया कुछ दिन।

सूरज निकला सैर को (५ छंद)

सूरज निकला सैर को, बड़े जोश के साथ।
सहमी सहमी शीत ने, जोड़ लिए अब हाथ।
जोड़ लिए अब हाथ, विदाई सबसे माँगी
फिर आने की बात, कही, ज़िद अपनी त्यागी।
समय हुआ अनुकूल, दिवस का पारा उछला
बड़े जोश के साथ, सैर को सूरज निकला।

तिल तिल करके बढ़ रहा, दिन दिनकर के साथ।
गुड-पपड़ी, तिल-रेवड़ी, दीख रही हर हाथ।
दीख रही हर हाथ, हवा के छिड़े तराने।
ले पतंग औ' डोर, चले सब पर्व मनाने।
लगा गगन में जाम, जमी हर छत पर महफिल
दिन दिनकर के साथ, बढ़ रहा फिर से तिल तिल।

चलते चलते सूर्य ने, बदला अपना भेस।
जलावतन कर ठंड को, भेज दिया परदेस।
भेज दिया परदेस, देश में उत्सव जागा

जन जन हुआ प्रसन्न, दुम दबा कुहरा भागा।
सौंप गई नव-आस, शीत ऋतु ढलते ढलते
बदला अपना भेस, सूर्य ने चलते चलते।

देखा फिर से बाग में, चहल पहल थी आज।
सोचा अब तो शीत का, पूर्ण हो चुका राज।
पूर्ण हो चुका राज, बरस अगले आएगी
पुनः नए उपहार, साथ अपने लाएगी।
शैशव तजकर सूर्य, छुएगा यौवन रेखा
चहल पहल थी आज, बाग में फिर से देखा।

राहत दे दी सूर्य ने, आहत है अब ठंड।
बोरा बिस्तर बाँधके, छोड़ा राज अखंड।
छोड़ा राज अखंड, चली अपने घर वापस
नव किरणों के साथ, उमंगें लाया तापस।
सरल हुए सब काम, पूर्ण जन जन की चाहत।
आहत है अब ठंड, सूर्य ने दे दी राहत।

जिस घर सजती वाटिका (२ छंद)

जिस घर सजती वाटिका, रोप स्नेह के फूल।
उस घर क्यों होंगे भला, बाधाओं के शूल।
बाधाओं के शूल, सदा बरबादी लाते
गृहस्वामी के कष्ट, चुभन से बढ़ते जाते।
कहनी इतनी बात, काँपते काँटे थर थर
रोप स्नेह के फूल, वाटिका सजती जिस घर।

घर आँगन की वाटिका, खिली खिली है आज।
माली ही यह जानता, क्या है इसका राज़।
क्या है इसका राज़, उसी ने अंकुर सींचे
अब तो फल का स्वाद, मिल रहा आँखें मींचे।
होतीं श्रम से मीत, मुरादें पूरी मन की
रहती खिली सदैव, वाटिका घर-आँगन की

शरद पूर्णिमा (२ छंद)

दूध नहाई पूर्णिमा, शरद परी की रात।
जन जन पर्व मना रहा, छत पर रखकर भात।
छत पर रखकर भात, मधुर रस घोले रैना।
सजी चाँदनी आज, लिए कजरारे नैना।
शीतल सुरभित मंद, हवा तन मन को भाई।
शरद परी की रात, पूर्णिमा दूध नहाई।

शीतल किरणें चंद्र की, बिखरीं चारों ओर।
शरद पूर्णिमा रात का, उत्सव है पुरजोर।
उत्सव है पुरजोर, लोग सब छत पर धाए
मिल अपनों के साथ, दुग्ध के पात्र सजाए।
रसमय रजनी रूप, कर रहा तन मन बेकल
बिखरी चारों ओर, चंद्र की किरणें शीतल।

विजया दशमी(५ छंद)

कई दशानन देश में, पनप रहे हैं आज।
बालाएँ भयभीत हैं, फैला चौपट राज।
फैला चौपट राज, बसी अंधेर नगरिया
पनघट नहीं सुरक्ष, किस तरह भरें गगरिया।
दीवारों में कैद, हो गए घर के आँगन
पनप रहे हैं आज, देश में कई दशानन।

मन के जाले साफ कर, धो डालें हर दोष
अंतर का रावण जला, करें विजय उद्घोष।
करें विजय उद्घोष, स्वार्थ की लंका तोड़ें
यत्र, तत्र, सर्वत्र, राज्य-परमारथ जोड़ें।
दीप प्रेम के बाल, करें रोशन दिल काले
धो डालें हर दोष, हटा कर मन के जाले।

लंका गुपचुप स्वार्थ की, बाँध रहे बहु लोग।
रखा काल को कैद में, भोग रहे हर भोग।

भोग रहे हर भोग, पाप करते न अघाते
चढ़ा धनुष पर बाण, राम का स्वाँग रचाते।
पाकर खोटे वोट, बजाते इत-उत डंका
बाँध रहे बहु लोग, स्वार्थ की गुपचुप लंका।

रावण ही बदनाम क्यों, सोचो कुछ इंसान।
बसा हुआ है आज तो, हर मन में हैवान
हर मन में हैवान, अराजकता है फैली
हावी है आतंक, हो चुकी हवा विषैली।
रक्त सना है आज, देश का सारा प्रांगण
क्यों है फिर बदनाम, 'कल्पना' केवल रावण।

विजया दशमी पर्व का, अर्थ बहुत है गूढ़।
रावण के पुतले जला, खुश है मानव मूढ़।
खुश है मानव मूढ़, मगर क्या हक है उसको
क्या वह उससे श्रेष्ठ, जलाना चाहे जिसको?
जिस दिन होंगे ख़ाक, देश से क्रूर कुकर्मी
उस दिन होगी मीत, वास्तविक विजया दशमी।

नया साल (५ छंद)

सौ दरवाजे खुल गए, आया साल नवीन।
सजल नयन, संतप्त मन, विदा हुआ प्राचीन।
विदा हुआ प्राचीन, दिलों में याद रहेगा
बीते कल की बात, पुनः इतिहास कहेगा।
कहनी इतनी बात, समय कर रहा तकाजे
शुभ मन करें प्रवेश, खुल गए सौ दरवाजे।

आएगा नूतन बरस, मचा हुआ है शोर।
चहल पहल है विश्व में, स्वागत की पुरजोर।
स्वागत की पुरजोर, अंक बदले जाएँगे
नव कैलेंडर आज, घरों में मुस्काएँगे।
राग रंग के साथ, रतजगा मन भाएगा
ज़ोर-शोर के साथ, वर्ष नूतन आएगा।

दिशा दिशा में धूम है, गूँज रहा संगीत।
नया वर्ष, ईश्वर करे, बने सभी का मीत।
बने सभी का मीत, प्रीत के अंकुर फूटें।

खुशहाली के पेड़, उगें फल सब ही लूटें।
स्वागत होगा आज, शान से अर्ध निशा में
गूँज रहा संगीत, धूम है दिशा दिशा में।

कल की बातें छोड़िए, करें आज की बात।
नया साल फिर आ गया, लेकर नव सौगात।
लेकर नव सौगात, हृदय से सभी कबूलें।
करें विश्व में नाम, गगन के तारे छू लें।
भूलें बीती रात, सँवारे प्रात नवल की
करें आज की बात, गौण हैं बातें कल की।

शहरों से की प्रार्थना, गाँवों ने इस बार।
नए बरस को बंधुओं, भेजो हमरे द्वार।
भेजो हमरे द्वार, तरक्की हम भी चाहें।
सूखे रहें न खेत, स्वर्ण सी फसल उगाएँ।
बुत बनकर चुप ओढ़, खड़े हो क्यों बहरों से?
गाँवों ने इस बार प्रार्थना की शहरों से।

माँ पूजा माँ आरती (६ छंद)

माँ पूजा, माँ आरती, माँ को मानें ईश।
आँचल में अमृत भरा, मुख पर शुभ आशीष।
मुख पर शुभ आशीष, भरी ममता से झोली
दुख लेकर सुख बाँट, बहुत खुश होती भोली।
कहनी इतनी बात, जान लें माँ की महिमा
प्रातः का यह मंत्र, वेद सी पावन है माँ!

माँ की ममता में निहित, यह अनंत आकाश।
गहराई है नीर सी, जगमग सूर्य प्रकाश।
जगमग सूर्य प्रकाश, स्वर्ग है यह धरती का
अगर न इसकी ओट, दिखेगा हर सुख फीका।
माँ जन्मों का सार, सकल जीवन की झाँकी
तीन लोक की ज्योत, निहित ममता में माँ की।

मिलता है बहु पुण्य से, माँ का माथे हाथ।
करें नमन माँ शक्ति को, भक्ति भाव के साथ।
भक्ति भाव के साथ, पूर्ण हों सकल इरादे

शुभ ममत्व की छाँव, दुष्टतम दोष मिटा दे।
कहनी इतनी बात, सुमन सा जीवन खिलता
माथे माँ का हाथ, कई पुण्यों से मिलता।

शैशव बीता गोद में, बचपन भी भय मुक्त।
यौवन में आशीष सब, मातृ स्नेह से युक्त।
मातृ स्नेह से युक्त, मिले वरदान अनगिने।
सोए सुरभित सेज, बुन लिए सुंदर सपने।
माँ पर दें हम वार, मिला जो हमको वैभव
आजीवन हो याद, सुहाना बचपन शैशव।

माँ बिन अपना कौन है, माँ बच्चों की जान।
जन्म नहीं केवल दिया, किए सकल सुख दान।
किए सकल सुख दान, कहाई जीवनधारा
दुनिया का हर दोष, सिर्फ ममता से हारा।
माँ को करें प्रणाम, सफलता पाएँ हर दिन
ममता की यह खान, न कोई अपना माँ बिन।

माँ जैसा कोई नहीं, देख लिया संसार।
किश्ती थी मँझधार में, हमें उतारा पार।
हमें उतारा पार, सुख नहीं अपना देखा
हर बाधा को बाँध, बना दी लक्ष्मण रेखा।
कहनी इतनी बात, लाख हो रुपया पैसा
देख लिया संसार, नहीं कोई माँ जैसा।

गणपति-पूजन (२ छंद)

गणपति पूजन पर्व की, मची हुई है मौज।
घर घर होती आरती, गायन वादन रोज़।
गायन वादन रोज़, सकल जन हँसते गाते
लड्डू, मोदक, भोग, लगा सब मिलकर खाते।
दीपक, अगर, सुगंध, श्लोक, मंत्रों का गुंजन
मन को करता मुग्ध, भावमय गणपति पूजन।

परम्पराएँ देश की, नैतिकता का मूल।
भोली जनता प्रेम से, करती सहज कबूल।
करती सहज कबूल, श्रंखला जोड़ कर्म की
तन की पीड़ा भूल, जगाती ज्योत धर्म की।
कहनी इतनी बात, सभी त्यौहार मनाएँ
नैतिकता का मूल, देश की परम्पराएँ।

हिन्दी की सेवा करूँ (६ छंद)

पुनर्जन्म है सच अगर, चाहूँ मैं हर बार
हिन्दी की सेवा करूँ, जन्मूँ बारम्बार।
जन्मूँ बारम्बार, देश में अलख जगाऊँ
करने को विस्तार, नए कानून बनाऊँ।
कहनी इतनी बात, एक यह जीवन कम है
जन्मूँ बारम्बार, सच अगर पुनर्जन्म है।

हिन्दी भाषा श्रेष्ठतम, अद्भुत इसकी शान।
विविध विधागत काव्य से, भरी हुई यह खान
भरी हुई यह खान, अगर गहरे जाएँगे
मोती बहु अनमोल, हाथ अपने पाएँगे।
करें पूर्ण सम्मान, 'कल्पना' मन-अभिलाषा
अद्भुत इसकी शान, श्रेष्ठतम हिन्दी भाषा।

बहु भाषाएँ सीखिये, पर हिन्दी हो खास।
हिन्दी से ही बंधुओं, बढ़े आत्मविश्वास।

बढ़े आत्मविश्वास, महक इसमें है देशी
क्यों प्रसन्न हैं आप? चूमकर भाव विदेशी।
कहनी इतनी बात, देश की शान बढ़ाएँ
हिन्दी के ही बाद, सीखिये बहु भाषाएँ।

जन्मे हिदुस्तान में, हिन्दी पहली मीत।
हिन्दी की थीं लोरियाँ, हिन्दी के ही गीत।
हिन्दी के ही गीत, सीखकर बड़े हुए हम।
आज उसी का हाथ, छोड़ क्यों खड़े हुए हम।
कहे 'कल्पना' आज, भाव क्यों बदले मन में
क्यों न रहा अब याद, कि हम भारत में जन्मे।

हिन्दी तेरे हाल पर, मन में उठे सवाल।
एक दिवस तेरे लिए, क्यों ना पूरा साल।
क्यों ना पूरा साल, तुझे सब हैं अपनाते
करके कुछ दिन ढोंग, साल भर फिर सो जाते।
शासन भी दिन रात, सदा अंग्रेजी टेरे
मन में उठे सवाल, हाल पर हिन्दी तेरे।

भारत माँ का साथियों, करें आज शृंगार।
हिन्दी का तो ताज हो, बाकी कंगन हार।
बाकी कंगन हार, अंग सारे दमकेंगे
हर भाषा के भाव, मित्र बन साथ रहेंगे
कहनी इतनी बात, शान पर डले न डाका
ऐसा हो शृंगार, साथियों भारत माँ का।

वर्षा मंगल (१० छंद)

हुई विदाई ग्रीष्म की, आया वर्षाकाल।
बूँदों की बौछार से, जन जन हुआ निहाल।
जन-जन हुआ निहाल, किया घर घर ने स्वागत।
शीतल चली बयार, मिली तन मन को राहत।
जल स्रोतों में धार, बरसती बरखा लाई।
आया वर्षाकाल, ग्रीष्म की हुई विदाई।

बादल आए दूर से, लेकर यह पैगाम।
मानसून इस बार है, धरती माँ के नाम।
धरती माँ के नाम, नहीं अब सूखा होगा
शेष न होगी प्यास, न कोई भूखा होगा।
हरा भरा इस बार, दिखेगा माँ का आँचल।
लेकर यह पैगाम, दूर से आए बादल।

पहली बारिश दे गई, तन मन को आनंद।
चाय पकौड़ी साथ में, शाम हो गई छंद।
शाम हो गई छंद, गीत रातों ने गाया।

बूँदों ने भरपूर, मेघ मल्हार सुनाया।
सूरज अंतर्ध्यान, फिज़ाएँ हुईं रुपहली
तन मन को आनंद दे गई बारिश पहली।

बिखरे बादल व्योम में, साथ सलोने रंग।
बूँदें पर्व मना रहीं, इंद्रधनुष के संग।
इंद्रधनुष के संग, देख धरती मुस्काई
पुष्प पात के साथ, प्रफुल्लित खूब नहाई।
कली कली के गात, धवल धारा से निखरे
नव रंगों के साथ, व्योम में बादल बिखरे।

मौसम है बरसात का, बूँदों की बारात।
ढोल बजाने आ गए, बादल बिजली साथ।
बादल बिजली साथ, हो गई पुलकित धरती
ओढ़ चुनरिया सब्ज़, दिख रही जलकण भरती।
बिखरे रंग अपार, हुआ खुशियों का संगम
मन को भाया खूब, रूप बरसाती-मौसम।

बच्चों ने मिलकर किया, बूँदों का घेराव।

चली सुहानी सैर को, लो कागज़ की नाव।
लो कागज की नाव, संग गूँजी किलकारी
जल थल हुए समान, खिल उठी धरती सारी।
मौसम का उल्लास, छा गया सबके दिल पर
बूँदों का घेराव, किया बच्चों ने मिलकर।

बादल की मनुहार से, जाग उठे उद्यान।
पत्ते पत्ते ने किया, जल धारा में स्नान।
जलधारा में स्नान, खिल उठीं कोमल कलियाँ
मधुप कर उठे गान, उड़ीं चहुँ ओर तितलियाँ।
लहराया नम, शीत, पवन पुरवा का आँचल
जाग उठे उद्यान, देख बरसाती बादल।

बदरा कारे जा वहाँ, जहाँ सूखते खेत।
बंजर धरती हो चली, ज्यों मरुथल की रेत।
ज्यों मरुथल की रेत, फसल से सावन रूठा।
वादा कर आषाढ़, न बरसा वो भी झूठा।
कहना मेरा मान, "कल्पना" कहती प्यारे
जहाँ सूखते खेत, चला जा बदरा कारे।

सागर नदिया ताल जो, कल तक थे कंगाल।
मंगल वर्षा से हुए, सब वे मालामाल।
सब वे मालामाल, मिली नूतन जल-धारा
पुनः हुए तैयार, दान करने जल सारा।
अब न रहेगी रिक्त, दीन दुखियों की गागर
भरे सभी जल स्रोत, ताल, नद, नदिया, सागर।

अमृत वर्षा दे गई, एक नया उत्साह।
फसलों को जीवन मिला, होगा धान अथाह।
होगा धान अथाह, घरों में पर्व मनेंगे
होंगे सुखी किसान, पूर्ण सपने भी होंगे।
कहनी इतनी बात, देश का जन जन हर्षा
एक नया उत्साह, दे गई अमृत वर्षा।

गाँव-शहर (५ छंद)

जीवन शैली शहर की, बोझिल और अधीर।
चौराहे गतिरोध हैं, सड़कें केवल भीड़।
सड़कें केवल भीड़, मची है मारामारी
सेहत से खिलवाड़, हृदय पर चलती आरी।
जमघट सुबहो-शाम, और हर दिन है रैली
बोझिल और अधीर, शहर की जीवन शैली।

शुद्ध हवा को खा रही, इमारतों की फौज।
रहवासी मजबूर हैं, कर्ताओं की मौज।
कर्ताओं की मौज, कर रहे खूब कमाई
मची हुई है लूट, नहीं होती सुनवाई।
तरस रहे हैं लोग, स्वस्थ बहती पुरवा को।
इमारतों की बाढ़, खा रही शुद्ध हवा को।

जनसंख्या की वृद्धि का, शहर झेलते दंश।
नाममात्र ही रह गया, प्राणवायु का अंश।
प्राणवायु का अंश, सिलसिला हर दिन जारी

गाँव शहर की ओर, बढ़ रहे बारी बारी।
पनपें यदि ग्रामीण, रहे ना दुविधा बाकी।
शहरों से हो दूर, वृद्धि यह जनसंख्या की।

गाँव हमारे देश की, खुशहाली की खान।
फसल उगाते प्रेम से, सबके लिए किसान।
सबके लिए किसान, वहीं पाएँ यदि अवसर
जनसंख्या का बोझ, शहर पर होगा कमतर।
कहनी इतनी बात, अगर यह तंत्र विचारे
भर देंगे खलिहान, देश के, गाँव हमारे।

धारा अगर विकास की, मुड़े गाँव की ओर।
शहरों पर फिर क्यों पड़े, जनसंख्या का ज़ोर।
जनसंख्या का ज़ोर, अगर थोड़ा भी कम हो
प्रदूषणों से आज, शहर भी क्यों बेदम हो।
कहनी इतनी बात, यही देना है नारा
मुड़े गाँव की ओर, तरक्की की अब धारा।

देश-माटी (१३ छंद)

सोने की चिड़िया कभी, कहलाता था देश
आई आँधी लोभ की, सोना बचा न शेष।
सोना बचा न शेष, पुनः अपनों ने लूटा।
भरे विदेशी कोष, देश का ताला टूटा।
हुई इस तरह खूब, सफाई हर कोने की
ढूँढ रही अब डाल, लुटी चिड़िया सोने की।

जो रहते परदेस में, मन में बसता देश।
जोड़ा अंतर्जाल ने, दुविधा रही न शेष।
दुविधा रही न शेष, एक है कोना कोना
यही विश्व का मंच, यहीं सब साझा होना।
कहे 'कल्पना' हाल, दिलों का सुनते-कहते
मन में बसता देश, विदेशों में जो रहते।

पावन धरती देश की, कल तक थी बेपीर।
कदम कदम थीं रोटियाँ, पग पग पर था नीर।
पग पग पर था नीर, क्षीर पूरित थीं नदियाँ

हरे भरे थे खेत, रही हैं साक्षी सदियाँ।
सोचें इतनी बात, आज क्यों सूखा सावन?
झेल रही क्यों पीर, देश की धरती पावन।

कोयल सुर में कूकती, छेड़ मधुरतम तान।
कूक कूक कहती यही, मेरा देश महान।
मेरा देश महान, मगर यह सुन लो हे नर!
काट-काट कर पेड़, हमें अब करो न बेघर।
कहनी इतनी बात, अगर वन होंगे ओझल।
कैसे मीठी तान, सुनाएगी फिर कोयल।

सीमा रक्षा हित खड़े, सीना तान जवान।
अपने अपने देश का, इनको बड़ा गुमान।
इनको बड़ा गुमान, सदा चौकन्ने रहते
लिए हथेली जान, कष्ट सारे ये सहते।
करे न दुश्मन घात, नहीं हो भंग सुरक्षा
करते वीर जवान, इसी हित सीमा रक्षा।

प्रहरी ये निज देश के, सच्चे वीर सपूत।
नस-नस में इनकी भरा, जज़्बा-जोश अकूत।
जज़्बा-जोश अकूत, अखंडित इनमें देखा।
किसकी भला मजाल, कि लाँघे लक्ष्मण रेखा।
सीमा पर सिर तान, चौकसी करते गहरी
सच्चे वीर सपूत, देश के हैं ये प्रहरी।

शुभ दिन आया साथियों, लिए तिरंगा संग
गहरे भाव प्रतीक हैं, ध्वज के तीनों रंग
ध्वज के तीनों रंग, कहे केसरिया हमसे
बलिदानों ने मुक्त, किया भारत को तम से।
श्वेत शांति का दूत, हरे से खुशियाँ अनगिन।
चक्र रखे गतिमान, मुबारक सबको शुभ दिन।

लहराएँगे शान से, आज तिरंगा तान।
इस दिन मिली स्वतन्त्रता, साथ पूर्ण सम्मान।
साथ पूर्ण सम्मान, बहुत ही दिन पावन था
नई भोर के साथ, उगा था सूर्य अमन का।
देश प्रेम के गीत, पुनः गाए जाएँगे

भक्ति भाव के साथ, तिरंगा लहराएँगे।

जागो भारत वासियों, बदलो शासन तंत्र।
गाँव गाँव में फूँक दो, नव विकास का मंत्र।
नव विकास का मंत्र, इन्हें शहरों से जोड़ो।
भ्रष्टों को ललकार, कहो अब कुर्सी छोड़ो।
हुआ बहुत आराम, उठो अब आलस त्यागो
बदलो शासन तंत्र, लाल भारत के जागो।

अंतर्ज्वाला देश को, जला रही है आज।
अपने ही सिर देखना, सभी चाहते ताज।
सभी चाहते ताज, देश के लिए न कोई।
गाता स्वरथ-गीत, देखिये जिसको वो ही।
करें जतन ज्यों मीत, सभी को मिले निवाला
स्वर्ग बनाएँ देश, बुझाकर अंतर्ज्वाला।

सुजला, सुफला मातृभू, हम तेरी संतान।
यह जीवन तो कर दिया, हमने तेरे नाम।
हमने तेरे नाम, कष्ट तेरे हर लेंगे।

हरियाली से पूर्ण, गोद तेरी कर देंगे।
सर्व सुखों का दान, दिया माँ हमें वत्सला।
हम तेरी संतान, मातृभू, सुजला, सुफला।

चाह हमारी हो यही, करे तरक्की देश।
कदम बढ़ाएँ साथ में, अलग लाख परिवेश।
अलग लाख परिवेश,एकजुट हो हर कोना
बोएँ ऐसे बीज, कि धरती उगले सोना।
कहनी इतनी बात, भुला कर निजता सारी
करे तरक्की देश, यही हो चाह हमारी।

भूल न जाएँ आज उन, वीरों के बलिदान।
आज़ादी के वास्ते, दिये जिन्होंने प्राण।
दिये जिन्होंने प्राण, अमन के दीपक बाले
माँ की गोद उजाड़, दे गए हमें उजाले।
बुझें न ज्यों वे दीप, कर्म-पथ वो अपनाएँ
वीरों के बलिदान, साथियों भूल न जाएँ।

जन-सेवक ये देश के, नए लक्ष्य के साथ।

कर्म क्षेत्र में आ जुटे, थामा श्रम का हाथ।
थामा श्रम का हाथ, कष्ट सहने को तत्पर
जग से नाता जोड़, रहेंगे प्रहरी बनकर।
धन-सुख औ यश-नाम, मिलेगा इनको बेशक
सकल देश की शान, कहाते ये जन सेवक।

नव-जीवन की राह पर, निकले वीर जवान।
कुछ समाज सेवा करें, इनका है अरमान।
इनका है अरमान, निबल हैं चाहे तन से,
भाव भावना श्रेष्ठ, और है प्रेम वतन से।
कहनी इतनी बात, खास है दृढ़ता मन की,
निकले वीर जवान, राह पर नव-जीवन की।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी (५ छंद)

कहते पर्व प्रधान है, भारत देश विशाल।
कृष्ण जन्म का पर्व भी, मनता है हर साल।
मनता है हर साल, झाँकियाँ जोड़ी जातीं
हर चौराहे टाँग, मटकियाँ फोड़ी जातीं।
मोहन माखनचोर, स्वाँग में बालक रहते
भारत देश विशाल, धाम पर्वों का कहते।

कथा सुनाते वेद हैं, वह था द्वापर काल।
कृष्ण भाद्रपद अष्टमी, जन्मे थे नंदलाल।
जन्मे थे नंदलाल, रात आधी थी तम की
भू पर आए ईश, मिटाने छाया गम की।
यह दिन पावन मान, पर्व सब लोग मनाते
वह था द्वापर काल, वेद हैं कथा सुनाते।

कहने को पटरानियाँ, थीं मोहन की आठ।
सोलह हज़ार रानियों, संग अलग थे ठाठ।
संग अलग थे ठाठ, मगर ये सब कन्याएँ

बतलाता इतिहास, कहाईं वेद ऋचाएँ।
असुरों से उद्धार, किया इनका मोहन ने
मुख्य रानियाँ आठ, यही वेदों के कहने।

मोहन मथुरा चल पड़े, तजकर गोकुल ग्राम।
हुई अकेली राधिका, दीवानी बिन श्याम।
दीवानी बिन श्याम, गोप, गोपी सब रोए।
भूखा सोया गाँव, नयन भर नीर भिगोए।
सूना यमुना तीर, ग्वाल, गाएँ, मुरली बिन
नन्द यशोदा क्लांत, हुए बिछड़े जब मोहन।

कृष्ण जगत का मूल है, नहीं सिर्फ अवतार।
अर्जुन का यह सारथी, गीता का यह सार।
गीता का यह सार, भक्ति का भाव यही है
युद्ध नीति का नाम, काल असुरों का भी है।
आकर्षण, चातुर्य, ज्ञान, गुण स्रोत सुमत का
नहीं सिर्फ अवतार, मूल है कृष्ण जगत का।

रक्षा बंधन (५ छंद)

रक्षा बंधन पर्व पर, बहना आई गाँव।
हाथों में मेहँदी रची, और महावर पाँव।
और महावर पाँव, चूड़ियों सजी कलाई।
नैहर का लख नेह, भाग्य निज पर इतराई।
बाँध रेशमी डोर, किया भाई का वंदन।
बहना आई गाँव, मनाने रक्षा बंधन।

लहँगा-चुन्नी ओढ़कर, छोटी है तैयार।
प्यारे भाई के लिए, लाई है उपहार।
लाई है उपहार, संग रेशम का धागा।
बँधा कलाई प्यार, भाग्य भाई का जागा।
फूलों सी मुस्कान, लिए नन्हीं सी मुन्नी
मना रही है पर्व, पहनकर लहँगा-चुन्नी।

रीत निभाना प्रीत की, भैया मेरे चाँद।
बहन करे शुभ कामना, रेशम डोरी बाँध।

रेशम डोरी बाँध, लगाए माथे टीका
बिन राखी त्यौहार, सकल सावन है फीका।
कहे बहन हे भ्रात, मुझे तुम भूल न जाना
सावन में हर साल, बुलाकर रीत निभाना।

आता सावन में सखी, राखी का त्यौहार।
हर धागे से झाँकता, भ्रात-बहन का प्यार।
भ्रात-बहन का प्यार, बाँध बहना खुश होती
रेशम की यह डोर, कीमती सबसे मोती।
बचपन का वो पृष्ठ, पुराना फिर खुल जाता
राखी का त्यौहार, सखी सावन में आता।

भाई है उस छोर पर, बहना है इस छोर
सात समंदर बीच में, हाथ रेशमी डोर।
हाथ रेशमी डोर, आज है रक्षा बंधन
नैन तकें चहुं ओर, चल रहा मन में मंथन।
क्यों हैं इतने दूर, घड़ी क्यों ऐसी आई?
बहना है इस छोर, किनारे दूजे भाई।

शुभ दीवाली (६ छंद)

शुभ दीवाली आ गई, सजे सभी घर द्वार।
राँगोली देहरी दिखी, द्वारे वंदनवार।
द्वारे वंदनवार, हजारों दीप जलेंगे
लक्ष्मी माँ को आज, पूजने सभी जुटेंगे।
पुष्प, दीप, सिंदूर, सजी पूजा की थाली
लेकर शुभ संदेश, आ गई शुभ दीवाली।

जगमग तारों से भरा, नील-गगन का थाल।
आज अमावस रात है, लाई तम का काल।
लाई तम का काल, जले दीपक घर-घर में
और पर्व का दौर, चला हर गाँव शहर में
एक नया उल्लास, धरा पर बिखरा पग-पग
नील-गगन का थाल, भरा तारों से जगमग।

उत्सव खूब मनाइए, साथ सकल परिवार।
दीप प्रेम के बालिए, जगमग हो संसार।

जगमग हो संसार, उजाला सौहर गाए।
अपनों के उपहार, संग दीवाली लाए।
तम की होगी हार, जयी होगा फिर वैभव
साथ सकल परिवार, मने दीपों का उत्सव।

पत्र लिखा है पुत्र ने, आएगा इस बार।
दीप जलाने साथ में, फिर पुरखों के द्वार।
फिर पुरखों के द्वार, पर्व की धूम मचेगी।
भक्ति भाव के साथ, लक्ष्मी-मातु पुजेगी।
माँ के मुख पर आज, अनोखा रंग दिखा है
आएगा इस बार, पुत्र ने पत्र लिखा है।

जब अँधियारा पाप का, फैले चारों ओर।
ज्योत जलाएँ पुण्य की, दीप धरें हर छोर।
दीप धरें हर छोर, कालिमा रहे न तम की
और अमावस रात, बने जगमग पूनम की
सुख देगा तब मीत, दीप का पर्व हमारा
हो अंतर से दूर, पाप का जब अँधियारा।

कथा पुरातन कह रहा, दीप पर्व यह खास।
घर लौटे थे राम जी, कर पूरा वनवास।
कर पूरा वनवास, विजय रावण पर पाकर
दीप जलाए खूब, राज्य ने खुशी मनाकर
उसी काल से रीत, चली आई यह पावन
दीप पर्व यह खास, कह रहा कथा पुरातन।

माँ गंगा (४ छंद)

उतरी गंगा स्वर्ग से, लिए वेगमय धार।
घनी जटाओं बीच में, शिव ने झेला भार।
शिव ने झेला भार, उसे माथे बैठाया
मृत्युलोक में भेज, धरा को स्वर्ग बनाया।
अमृत जल का घूँट, करे हर रोगी चंगा
लिए वेगमय धार, स्वर्ग से उतरी गंगा।

तुमसे मोक्ष मिला हमें, तुम ही तारनहार।
गंगा माँ तुमने किए, जन-जन पर उपकार।
जन-जन पर उपकार, धरा को स्वर्ग बनाया
किया जहाँ विश्राम, नगर वो धाम कहाया।
दिये स्वस्थ वरदान, उबारा जग को गम से
तुम ही तारनहार, मोक्ष भी पाया तुमसे।

आते हैं सब मोक्ष को, गंगा माँ के द्वार।
पर उसके इस द्वार का, कौन करे उद्धार।
कौन करे उद्धार, धार में सभी नहाते

और प्रदूषित तत्व, उसे अर्पण कर जाते।
निर्मलता की बात, किसी को सूझी है कब
बस गंगा के द्वार, मोक्ष को आते हैं सब।

चलिये मित्रों प्रण करें, हम भारत के लाल।
गंगा फिर निर्मल बने, ऐसा करें कमाल।
ऐसा करें कमाल, सभी मन से हों तत्पर
हर संभव श्रमदान, करें सब साथी मिलकर।
पूरा हो अभियान, घरों से आज निकलिए
हम भारत के लाल, प्रण करें मित्रों चलिये।

गर्मी के रूप (६ छंद)

पग लिपटे बंजर धरा, तन झुलसाती धूप।
हलक सुखाता जा रहा, गर्मी का यह रूप।
गर्मी का यह रूप, गजब तेवर दिखलाए
रह रह करती घात, हवा कातिल मुस्काए।
दीनों का घट सून, प्यास से कैसे निपटे
तन झुलसाती धूप, धरा बंजर पग लिपटे।

गर्मी का इक रूप ये, लगता बड़ा हसीन।
सुबह शाम गुलजार औ, दुपहर निद्रा लीन।
दुपहर निद्रा लीन, सुलाते कूलर ए॰सी॰
उतना ही आनंद, जहाँ क्षमता हो जैसी।
कहनी इतनी बात, न कोई मौसम फीका
लगता बड़ा हसीन, रूप यह भी गर्मी का।

नभचर, थलचर, जीव सब, गर्मी से हैरान।
तड़क रहीं सड़कें सभी, दरक रहे मैदान।
दरक रहे मैदान, जलाशय सूखे सारे

फूल पात उद्यान, बिना जल के सब हारे।
ऐसे करें उपाय, कंठ सबके ज्यों हों तर
पाएँ जीवनदान, जीव सब नभचर थलचर।

ऋतु परिवर्तन अटल है, शीत बढ़े या ताप।
जैसे भी बदलाव हों, बदल जाइए आप।
बदल जाइए आप, अगर हो तपता मौसम
पानी तो लें खूब, और भोजन कर लें कम
कहनी इतनी बात, बना लें वैसा ही मन
शीत बढ़े या ताप, अटल है ऋतु परिवर्तन।

सिर पर जब सूरज चढ़े, बाहर धरें न पाँव।
पहनें सूती वस्त्र औ, बैठें शीतल छाँव।
बैठें शीतल छाँव, कीजिये भोजन हल्का
आधा करें अनाज, खूब हो सेवन फल का।
कहनी इतनी बात, ताप से रहें सँभलकर
बाहर धरें न पाँव, चढ़े जब सूरज सिर पर।

जल-संरक्षण का भला, कहाँ किसी को भान।

पल पल पानी हो रहा, भू से अंतर्ध्यान।
भू से अंतर्ध्यान, सिर्फ है दोहन जारी
शक्त उर्वरा भूमि, हो चली बंजर सारी।
ढूँढ रहे हैं लोग, धूप में जल-जल, जल-कण
पन्नों में है कैद, आज भी जल-संरक्षण।

ऋतु बसंत (४ छंद)

पलकें कोयल की खुलीं, ऋतु बसंत के संग।
कुहू कुहू की तान से, कुदरत भी है दंग।
कुदरत भी है दंग, उमंगित है अमराई
आम्र बौर से आज, हो रही गोद भराई।
झूम रहे तरु पात, हर तरफ खुशियाँ झलकें।
ऋतु बसंत के साथ, खुलीं कोयल की पलकें।

उतरी भू पर स्वर्ग से, एक अप्सरा आज।
देखा शोभित शीश पर, ऋतु बसंत का ताज।
ऋतु बसंत का ताज, रंग थे इतने प्यारे!
आल्हादित मन-प्राण, हो उठे देख नज़ारे।
सम्मुख थी साक्षात, सलोनी रूप सुंदरी।
एक अप्सरा आज, स्वर्ग से भू पर उतरी।

सोने सी सरसों सजी, मुसकाया हर खेत।
अद्भुत रूप बसंत का, धर आया है चैत।
धर आया है चैत, धरा पर देखी जन्नत।

बाँट रही दिल खोल, नज़ारे प्यारी कुदरत।
रंगों की यह रास, दिखे जादू टोने सी।
बागों में है सब्ज़, यहाँ पर है सोने सी।

अमराई में कोकिला, कौआ घर के पास।
लेकिन दोनों दूत हैं, ऋतु बसंत के खास।
ऋतु बसंत के खास, कोकिला बागों हँसती।
कौआ सबके साथ, हर गली इसकी मस्ती।
कहनी इतनी बात, न कमतर कौआ भाई
घर इससे गुलजार, कोकिला से अमराई।

पतझड़ (३ छंद)

हरियाली में घुल गए, पीले पीले रंग।
ऋतु परिवर्तन देखकर, डाली-डाली दंग।
डाली-डाली दंग, शीत ऋतु हुई पुरानी
आया पतझड़ पास, सुनाने नई कहानी।
बिन पत्तों के पेड़, दिख रहे खाली-खाली
बदल गई चहुं ओर पीतिमा में हरियाली।

पेड़ों पर अब पीतिमा, कर बैठी अधिकार।
पतझड़ ने आकर किया, हरीतिमा पर वार।
हरीतिमा पर वार, रंग कुदरत ने बदला
बाग हुए बेनूर, कि मौसम हुआ मनचला।
बिखरी हैं बिन पात, लताएँ भी मेड़ों पर।
पूर्ण पीत परिधान दिख रहे हैं पेड़ों पर।

पल पल झड़ते पात हैं, सूनी है हर डाल।
पतझड़ आया पूछने, अब मौसम का हाल।
अब मौसम का हाल, हवाओं को उकसाया

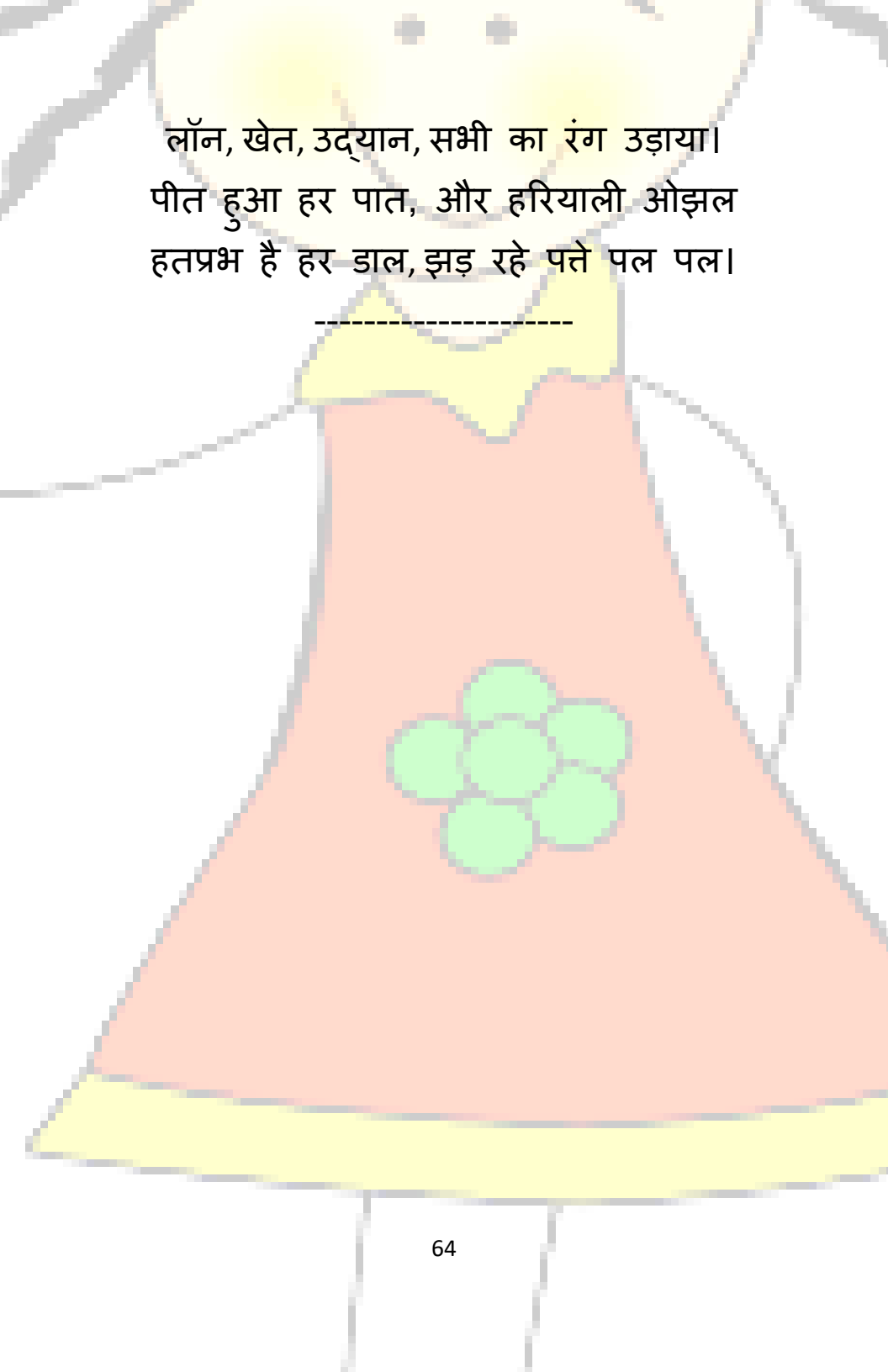

लॉन, खेत, उद्यान, सभी का रंग उड़ाया।
पीत हुआ हर पात, और हरियाली ओझल
हतप्रभ है हर डाल, झड़ रहे पत्ते पल पल।

सूरज संक्रांति (५ छंद)

तिल तिल करके बढ़ रहा, दिन दिनकर के साथ।
गुड पपड़ी तिल रेवड़ी, दीख रही हर हाथ।
दीख रही हर हाथ, हवा में छिड़े तराने।
ले पतंग औ डोर, सब चले पर्व मनाने।
लगा गगन में जाम, जमी हर छत पर महफिल
दिन दिनकर के साथ, बढ़ रहा फिर से तिल तिल।

चलते चलते सूर्य ने, बदला अपना भेस।
जलावतन कर ठंड को, भेज दिया परदेस।
भेज दिया परदेस, देश में उत्सव जागा
जन जन हुआ प्रसन्न, दुम दबा कुहरा भागा।
सौंप गई मधुमास, शीत ऋतु ढलते ढलते
बदला अपना भेस, सूर्य ने चलते चलते।

देखा फिर से बाग में, चहल पहल थी आज।
सोचा अब तो शीत का, पूर्ण हो चुका राज।
पूर्ण हो चुका राज, बरस अगले आएगी

पुनः नए उपहार, साथ अपने लाएगी।
शैशव तजकर सूर्य, छुएगा यौवन रेखा
चहल पहल थी आज, बाग में फिर से देखा।

सूरज निकला सैर को, बड़े जोश के साथ।
सहमी सहमी शीत ने, जोड़ लिए अब हाथ।
जोड़ लिए अब हाथ, विदाई सबसे माँगी
फिर आने की बात, कही, ज़िद अपनी त्यागी।
समय हुआ अनुकूल, दिवस का पारा उछला
बड़े जोश के साथ, सैर को सूरज निकला।

राहत दे दी सूर्य ने, आहत है अब ठंड।
बोरा बिस्तर बाँधके, छोड़ा राज अखंड।
छोड़ा राज अखंड, चली अपने घर वापस
नव किरणों के साथ, उमंगें लाया तापस।
सरल हुए सब काम, और पूरी जन-चाहत।
आहत है अब ठंड, सूर्य ने दे दी राहत।

दुनिया बड़ी कमाल की (४ छंद)

दुनिया बड़ी कमाल की, कहते हैं सब गोल।
रिश्ते हों या प्रेम हो, सबका लगता मोल।
सबका लगता मोल, हुई हर बात दिखावा
सतही मन इंसान, बन गया एक छलावा।
ओढ़े हुए नकाब, फिर रहे ज्ञानी गुनिया
कहे कल्पना गोल, बड़ी अद्भुत यह दुनिया।

दुःख सागर जो मानते, दुनिया को इंसान।
खुद जोड़े उसने सभी, व्यर्थ साज सामान।
व्यर्थ साज सामान, दुःखों का बोझ बढ़ाते
बरबादी की ओर, कदम फिर बढ़ते जाते।
भरते अपने हाथ, कुटिल कर्मों की गागर
दुनिया को नादान, कहें फिर दुःख का सागर।

जब तक दुनिया में रहें, क्रियाशील हों अंग।
अगर यंत्र इक बन गए, लग जाएगी जंग।
लग जाएगी जंग, स्वत्व ही खो जाएगा

कर्म कोश नाकाम, एक दिन हो जाएगा।
निर्भर होंगे मीत, मशीनों पर ही कब तक?
क्रियाशील हों अंग, रहें दुनिया में जब तक।

नज़र उठाकर देखिये, कुदरत के वरदान।
पाएँगे दूरान्त तक, दुनिया स्वर्ग समान।
दुनिया स्वर्ग समान, दिया दाता ने इतना।
रंग, गंध, रस, रूप, लुटाएँ चाहें जितना।
कहनी इतनी बात, जिएँ हर पल मुस्काकर
दुनिया स्वर्ग समान, देखिये नज़र उठाकर।

विविध छंद

दाता हमको दीजिये, सदा स्वस्थ वरदान
रोग नहीं आएँ निकट, चाहें ऐसा दान।
चाहें ऐसा दान, जीव-जीवन हो सुखमय
काया बने निरोग, शत्रुओं की हो अवजय।
हम तो हैं नादान, चाहिए ज्ञान विधाता
सदा स्वस्थ वरदान, दीजिये हमको दाता।

दूर प्रदूषण कीजिये, हरियाली के साथ।
हरे भरे मैदान हों, सुंदर हो हर पाथ।
सुंदर हो हर पाथ, स्वच्छतम हो जग सारा
होंगे मेघ विभोर, बहेगी अमृत धारा।
कहनी इतनी बात, खिलेगा भू का कण कण
हरियाली के साथ, कीजिये दूर प्रदूषण।

कर्म निरंतर कीजिये, मत सोचें प्रतिदान।
सद्निवेश, सच मानिए, देगा सद्परिणाम।
देगा सद्परिणाम, आस्था मन में रखिए

जितनी घुले मिठास, स्वाद वैसा ही चखिए।
कहनी इतनी बात, देखिये दानी बनकर
मत सोचें प्रतिदान, कीजिये कर्म निरंतर

ईश तुम्हारे द्वार पर, कैसा ये अन्याय
कोई पाए दोगुना, कोई भूखा जाय।
कोई भूखा जाय, भला कैसा ये चक्कर
भरें नहीं वे पेट, करें जो मेहनत डटकर।
कहाँ करें फरियाद, दुखी किस्मत के मारे
कैसा ये अन्याय, द्वार पर ईश तुम्हारे।

असली नकली मित्र की, कैसे हो पहचान।
रोज़ नया इक चेहरा, ओढ़ रहा इंसान।
ओढ़ रहा इंसान, मगर यह बात न जाने
लेंगे उसे लपेट, उसी के ताने बाने।
कहनी इतनी बात, नहीं जो फितरत बदली
मान घटेगा मित्र, चेहरा ओढ़ें असली।

उस दर कभी न जाइए, जहाँ न हो सम्मान।

नज़रों में हो बेरुखी, बोली ज्यों विष बाण।
बोली ज्यों विष बाण, तनिक हो नहीं नम्रता
खुद को मानें श्रेष्ठ, भावना में हो जड़ता
कहनी इतनी बात, बढ़े पग सोच समझकर
जहाँ न हो सम्मान, नहीं जाएँ फिर उस दर।

जन-जन को शिक्षित करें, शिक्षा है वरदान।
देकर पाएँ दो गुना, विद्या ऐसा दान।
विद्या ऐसा दान, कभी भी व्यर्थ न जाए
उन्नत बने समाज, आप का मान बढ़ाए।
कहनी इतनी बात, ध्यान से सुन लो रे मन
होगा सतत विकास, अगर हो शिक्षित जन-जन।

जान लिया गर आपने, अनुशासन का मोल।
पल-पल देगा आपके, जीवन में रस घोल।
जीवन में रस घोल, सुखी हर दिन गुजरेगा।
नित्य नवल उत्साह, उम्र का हर क्षण देगा।
और रहेंगे मित्र, आप निश्चिंत निरंतर।
अनुशासन का मोल, आपने जान लिया गर।

गुण का धन जिसको मिला, होगा यश सम्मान।
ऊँची शिक्षा हो न हो, गुण का ऊँचा नाम।
गुण का ऊँचा नाम, गुणीजन जहाँ रहेंगे
सुविचारों के साथ, ज्ञान के भाव जगेंगे।
कहनी इतनी बात, आस का तजो न दामन
होगा यश सम्मान, मिला जिसको गुण का धन।

कथनी करनी एक हो, व्यर्थ न बोलें बोल
फँस जाएँगे व्यूह में, खुल जाएगी पोल।
खुल जाएगी पोल, झूठ पर झूठ कहेंगे
नज़रें खुद से आप, चुराते फिरा करेंगे।
छोटी सी यह बात, 'कल्पना' मुझको कहनी
व्यर्थ न बोलें बोल एक हो कथनी करनी।

कुदरत तेरी गोद में,बिखरे रंग हज़ार।
निरख नयन थकते नहीं, सुंदर यह संसार।
सुंदर यह संसार, समझ कब पाया मानव।
अपने हित को साध, उजाड़ा तेरा वैभव।

क्या कहिए इस मूढ़, कुटिल मानव की फितरत
नहीं कर सका कद्र, आज भी तेरी कुदरत!

सुख सुविधा की चाह में, फर्ज़ न जाएँ भूल।
सत्पथ पर चलते रहें, काँटे हों या शूल।
काँटे हों या शूल, कदम ना डिगने पाएँ।
कितने हों गतिरोध, पार कर फर्ज़ निभाएँ।
कहनी इतनी बात, न पनपे मन में दुविधा
प्रथम अहम है फर्ज़, बाद में है सुख सुविधा।

सकारात्मक सोच से, बनते बिगड़े काम।
अन्तर्मन होता विमल, मिट जाता अज्ञान।
मिट जाता अज्ञान, कि दो पहलू जीवन के
देखें उजला पक्ष, कर्म के योगी बनके।
पनपें नहीं कदापि, हृदय में भाव निरर्थक
क्यों बिगड़ेंगे काम, सोचिए सकारात्मक।

तुम हो इस ब्रह्मांड के, सर्वश्रेष्ठ इंसान।
पर तब तक ही, जब तलक, ग्रसे नहीं शैतान।

ग्रसे नहीं शैतान, समझ लो उसका आशय
घोर गर्त की ओर, अन्यथा जाना है तय।
भ्रमित भोग के व्यर्थ, व्यूह में क्यों होना गुम
सर्वश्रेष्ठ इंसान, जबकि बनकर जन्मे तुम।

ख्यात हुए तो क्या हुआ, अगर हुए कुख्यात।
कर्म इस तरह कीजिये, जग में हों विख्यात।
जग में हों विख्यात, देश भी गर्व करेगा
देगा मान समाज, तमस मन से कम होगा।
कहे 'कल्पना' मीत, सुन! बुरे कर्म गहे जो
धिक्कृत होंगे आप, क्या हुआ ख्यात हुए तो।

बुरे न होते लोग सब, जो होते कुख्यात।
कर देते बेबस इन्हें, नामी औ' विख्यात।
नामी औ' विख्यात, छीन लेते हक इनके।
बदले की ये आग, बुझाते बेघर बनके।
मिलता है धिक्कार, प्रताड़ित सबसे होते
लेकिन जो कुख्यात, लोग सब बुरे न होते।

द्वापर युग में एक ही, हुआ कंस कुख्यात।
पर कलियुग में कंस हैं, गली गली में व्याप्त।
गली गली में व्याप्त, मगर कहलाते सज्जन।
जश्न मनाते मार, भ्रूण कन्या के अनगिन।
इसी देश के पूत, जनक, जन नेता, नागर
कहते ओढ़ नकाब, कंस का युग था द्वापर।

माया जोड़ें क्यों भला, यदि है पूत सपूत।
जोड़ी वो किस काम की, है यदि पूत कपूत।
है यदि पूत कपूत, कुकर्मों में खो देगा।
होगा अगर सपूत, सुकर्मों से जोड़ेगा।
कहनी इतनी बात, ईश पर सब कुछ छोड़ें।
कैसा भी हो पूत, किसलिए माया जोड़ें।

सुफलित होती प्रार्थना, जब मन हो शुभराह।
ईश विनय के मंत्र से, होते सफल उपाय।
होते सफल उपाय, सुलझती स्वयं उलझनें।
कर्म रेखियाँ आप, लाँघतीं सभी अड़चनें।
हो न 'कल्पना' आप, कभी भी दुख में विचलित।

मन हों यदि शुभ-भाव, प्रार्थना होती सुफलित।

महँगाई से त्रस्त जन, नेता चाहें भोग।
टाँग खिंचाई में लगे, सत्ताधारी लोग।
सत्ताधारी लोग, मुखौटे रोज़ बदलते
सधे जहाँ पर स्वार्थ, उसी रस्ते पर चलते।
हों चाहे कुख्यात, ख्याति यह उनको भाई
नेता चाहें भोग, डसे जन को महँगाई।

पाखी तेरे पंख जो, पा जाऊँ इक बार।
उड़ूँ गगन को थामकर, सपने लिए हज़ार।
सपने लिए हज़ार, प्रेम की पाती धर लूँ
बाँचूँ इत–उत सार, जहाँ भी दम पल भर लूँ।
गूँज उठे हर द्वार, 'कल्पना' स्नेहिल साखी
पा जाऊँ इक बार, पंख जो तेरे पाखी।

फँसा परिंदा जाल में, मुश्किल में हैं प्राण।
कैसे बंधन मुक्त हो, मिले कैद से त्राण।
मिले कैद से त्राण, पुनः आज़ादी पाए

मुक्त साँस के साथ, गगन में उड़ उड़ जाए।
किससे करे गुहार, बना इंसान दरिंदा
मुश्किल में हैं प्राण, जाल में फँसा परिंदा।

तिनका तिनका जोड़कर, पंछी बाँधे नीड़।
पर मानव समझा नहीं, उस प्राणी की पीर।
उस प्राणी की पीर, स्वार्थ बस अपना भाया
डाली डाली चीर, पेड़ ही काट गिराया।
क्या देंगे वो धीर, हृदय ही खाली जिनका
पंछी की तो नीड़, हो गई तिनका तिनका।

जीवन केवल कर्म है, इसका नहीं विकल्प।
ईश्वर भी उसके लिए, जिसके दृढ़ संकल्प।
जिसके दृढ़ संकल्प, चढ़ें मेहनत की सीढ़ी
अकर्मण्यता त्याग, बढ़े आगे नव पीढ़ी।
छोड़ अंध विश्वास, 'कल्पना' कहती रे मन
ईश्वर तब हैं साथ, कर्ममय है जब जीवन